International Journal of Advanced Technology in Engineering and Science
Volume No.07, Issue No. 11, November 2019
www.ijates.com
ijates
ISSN 2348 - 7550

नमिता सिंह के कहानियों की भावभूमि

श्रीमती डॉ. पवन राजपुरोहित
(जे0एन0वी0यू0) जोधपुर
सर्किट हाउस रोड़, गणेशपुरा जोधपुर।

'खुले आकाश के नीचे' इनका प्रथम कहानी संग्रह है। इसमें कुल चैदह कहानियाँ संकलित है। इनके नाम हैं- 'एक निर्णय', 'चेहरे', 'परतें', 'टूटजाने के बाद', 'खुलेआकाश के नीचे', 'जीम हुई बर्फ', 'काले अन्धेरे की मौत', 'लहरों के बीच', 'ममी', 'ठहरा हुआ सेवरा', 'मुक्ति', 'सन्नाटे के आगे' तथा नालेपार का आदमी।

डॉ. नमिता जी मेरी रचना प्रक्रिया लेख में लिखती है - "खुले आकाश के पीछे सोना हमेशा से मेरे लिए पेरशानी का कारण बना है, फैला हुआ विस्तूत नीला काला आकाश, चमकते हुए असंख्य विशालकाय सितारे मरे अस्तित्व और जिन्दगी की सार्थकता पर सवालिया निशान लगाते प्रतीत होते है और इसके साथ ही उनकी पेरशानी बढ जाती है।

1 इसी छटपटाहट से उपजी 'आत्म मन्थन' की कहानियाँ है 'खुले' आकाश के नीचे और काले अँधेरे की मौत। इस संग्रह की कहानियों में स्त्री वर्तमान दशा, उसका एकाकीपन, वृद्धावस्था का एकाकीपन, दलित चित्रण, बिगड़ते आधुनिक रिश्तों, मनुष्य की हृदयहीनता, मजदूर वर्ग के प्रति शोषण आदि समस्याओं को अपनी कहानी का विषय बनाया है।

'राजा का चैक' कहानी संग्रह में 8 कहानियाँ संग्रहित है। इनके शीर्षक है- 'राजा का चैक' 'समाधान', 'बसन्ती काकी', यह नहीं है, सैलाब', 'क्रॉसिंग', 'रक्षक', 'अपने लोग'। इनमें जीवन की सार्थकता की तलाश है तथा उन सामाजिक प्रक्रियाओं की दबी, ढकी शक्तियों की पड़ताल की कोशिश है जो समाज को क्या बना रही है बिगाड़ रही है या खण्डित करने का प्रयास कर रही है। वे शक्तियों कमी आर्थिक, कभी धार्मिक तो कभी राजनैतिक रूपों में उपस्थित होती है।
2 'नीलगाय की आँखे' (1990) कहानीमेंकुल 10 कहानियाँ संग्रहित है। अँगूठी, या देवी 'सर्वभूतेषू', 'एक पैरवाला शेर', 'कि रचों पर सजा इन्द्रधनुष', 'रामलीला', 'उत्सव के रंग', 'परिचय', 'एक बेताल कथा' और दर्द, 'नीय की आँखे' कहानियाँ संग्रहितहै।

इन कहानियों में बदलते राजनीतिक - सामाजिक जीवन मूल्य व परिस्थितियों, वर्गवैषम्य, आर्थिक शोषण व मध्यवर्गीय विसंगतियों के अलावानारी के आधुनिक सचेतन रूप, निम्न व शोषकतबकों में आयी जागरूकता और

विद्रोही वृत्ति आदि से लेखिका आन्दोलित ही नहीं होती वरन् रचनात्मक धरातल पर उन्हें स्वर भी देती है।साथ ही मानवीय संसाधनों की कामगता और का अहम भी इन कहानियों से महसूस किया जा सकता है।

जगल-गाथा (1992) कहानी संग्रह में जंगल-गाथा, बन्ती, मकान की छोटी, सांड, उबारने वाले हाथ, गणित, मूवक, गलत नम्बर का बजा, दौडनी के फूल तथा नतीजा इस प्रकार कुल 10 कहानियाँ संग्रहित है।

3 'जंगल गाथा' नमिता ज की फैन्टेसी आधारित कहानी है, जिसके पीछे समसामयिक सामाजिक सरंचना और सामाजिक प्रकिया से वैचारिक पृष्ट भूमि रही और शोषण की अमानदीयता की कहानी है जहाँ वातावरण की वैचारिक सौच द्वारा उभारने का प्रयत्न किया गय है। इस संग्रह की अन्य कहानियों में पूजींवादी व्यवस्था के मानवविरोधी चरित्र को उजागर करने के साथ-साथ सवेंदनशील, आत्मीयता और उच्चतर मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया है।
'निकम्मा लड़का' में आज की उपभोक्तावादी समाज की सोच का चित्रण हैं जहाँ हर माँ-बाप अपने बच्चे को पैसा कमाने की मशीन चाहते है जिसमें संवेदनहीनता पहली शर्त है और बच्चे की घुटन और मानिसक उत्पीडन अनिवार्य है। आज हम अपने बच्चों को सामाजिकता से काटकर आत्म केन्द्रित और तथा कथित बड़ा आदमी बनाना चाहते है।

4 इस संग्रह की अन्य कहानियों में जमीदाराना खून-खराबों, साम्प्रदायिक तत्त्वों, आधुनिक भागदौड़ में आम आदमी के सपनों का धरा रहा जाना, नारी की दयनीय स्थिति, अवसर वादिता तथा चिरबन्दिनी औरत को सदियों से चली आ रही पुरूष मानसिकता की बेड़ियों को तोडनों की वकालत की गई है।

'मिशन जंगल' और गिनी पिग कहानी संपह में खेल, बस्ती बडी रहती है। बीस सों इक्यावन का एक दिन, मिशन जंगल और गिनीपिंग, ये बेटिया, बार-बार में, अलख, घर चलते है डार्लिग, लाइन ऑफ कन्ट्राल, वेतादियों का नाम इसी हों गया, डाल से टूटेपत्ते, समय चक्र इस प्रकार 12 कहानियों संग्रहित है।

5 मिशन जंगल और गिनीपिंग ताजातरीन फेंन्टेसी कहानी है। ाजे आज के भूमण्डली करण विश्वमेंसत्ता और वर्चच्व की पागल दौड़ में विज्ञान के प्रयोगों का इस्तेमाल और उसके परिणामों को कल्पना का रूप देकर कुछ कहने की कोशिश है।

इस संग्रह की अन्य कहानियों में, निम्न-मध्य वर्ग की मजबूरियों, आधिनुक जीवन का हावी होना, नई पीढी की जिम्मेदारहीनता, निम्न वर्ग के पुरूषों की अकर्मणीयता, साम्प्रदायिक तत्त्वों आदि समस्याओं को उठाया गया है।

'अपनी सलीबे' (2003) उपन्यास पूरी सामाजिकता पर एक गाली है। मध्यवर्गीय पाखण्ड पर टिप्पणी है। दलित आई.ए.एस. पति, पढी-लिखी, बेहद महत्वाकांक्षी पत्नी जिसके पास राजपूत होने की सिर्फ शान है, बाकि ढहता हुआ खण्ड हर परिवार और घर में ठन्-ठन् गोपाल। एक बारगी परिस्थितियों ऐसी बनती है। कि जातिगत दर्प आहत होता है और पति को अपमानित होना पडता है। अपने में दर्द समेटे पति जब बाहर चला जाता है। तो नीलिमा उसे छोड़ कर नौकरी करने लगती है। फिफ स्वयम् को बदलने की प्रक्रिया जो जीवन के थपेडों से, अनुभव से, और सबसे ज्यादा सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में लोगों से, जुडनें के कारण और सामाजिक चेतना के विकास से सम्भव है। वह शुरू होती है लम्बे-अन्तराल के बाद जब उसने पति के पास पहुँचने का साहस किया तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

6 नमिताजी के सामने नीलिमा एक चुनौती थी। उन्होंने अपने सामाजिक जीवन के सारे अनुभव उसे दिये। कामकाजी औरतों के खाओं-पीओ मोज करो के अतिरिक्त एक संवेदनशील, सामाजिक पक्ष घरता का रूप भी प्रस्तुत किया।

नालेपार का आदमी, राजा का चैक, रामायान, सैलाव में नमिता सिंह ने सतावर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग की संवेदन शून्यता को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। मजदूर वर्ग की दैनिन्दन आवश्यकताओं के पूरा न होने पर वे हड़ताल रखते है, उनके घर चूल्हा नहीं जलता। परन्तु मालिक लोग उन्हें घार्मिकता की ओट में रख हमेशा शोषित वर्ग बनाए रखना खहते है ताकि उनका ऐश्वर्य बना रहे। लेखिका ने सकेंत किया है कि बुद्धिजीवी वर्ग और तथा कथित राजनीजिज्ञ धन औरहै सियत के आगे न केवल मौन हो जाते है बल्कि अपनी सुख-सुविधाओं के लिए जन-संघर्ष को कमजोर बनाते है। इन कहानियों में वे न केवल मानवीय मूल्य और सबन्धों की तलाश करती है, बल्कि राजनीतिक विसंगतियों के लिए जिम्मेदार षड़यन्त्र कारी शक्तियों के छल को उजागर करती है।

7 इस प्रकार अपने जीवानुभवों द्वारा नमिता जी ने साहित्यिक संघर्ष को लेखन रूप में प्रस्तुत किया अज्ञैर समाधन भी सुझाए। इनकी कहानियाँ सधर्म और संवेदना के विविध स्तरों से परिचित कराती हुई वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, गाँव और शहर के बीच बढ़ती दूरी, व्यक्ति और व्यक्ति के बीच टूटी मानवीय स्थिति, साम्प्रदायिकता की भयावहता और नारी शोषण, आदि का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती है। उन्होंने अपनी कहानियों में शोषित और उत्पीडित वर्ग की विषम परिस्थितियों से जूझते जन-साधारण की अदम्य जिजीविषा और संघर्ष की भावना को स्वर प्रदान किया है। अतः उनकी कहानियाँ समूचे जीवन का प्रतिनिधित्व करती है।

8 समाज की जातिवादी प्रवृत्तियों ने समाजको अमानवीयता का समूह दिखा है। व कविता जी ने दलित वर्ग को ऊँचा उठाने व समाज में उनका उचित स्थान पर करने को पुरजोर कोशिश की है। रक्षक, अपने लोग, काले अँधेरे की मौत, ठहरा हुआ सवेरा, यही नही, दर्दआदि कहानियों में ाजिगत भेदभाव व शोषण का चित्रण किया गया है।

महिलाओं की समस्याओं, उनकी अस्मिता व रावली करण को अपनी कहानी का विषय बनाया है। एक निर्णय, चेहर, परते, जीम हूई बर्फ, लहरों के बीच, ममी, बसन्ती काकी, बन्तो, गलत नम्बर का जूता, अँगूठी, या देवी सर्वभूतेषु, किरचो पर सजा इन्द्रधनुष, परिचय, एक बेताल कथा औरीस्वोंग, एक बार फिर, औरत और औरत, घर चलते हैं डार्लिंग आदि कहानियों में लेखिका ने नारी शोषण घृणा, अवसाद आदि नारी की विषमताओं एवं विसंगतियों की जटिलता को उद्घाटित करते हुए उसके संघर्ष और स्वतन्त्रय की भावना को चित्रित किया है। लेखिका ने नारीमन के सवेंदनशील पक्ष का बड़ रही मार्मिक चित्रण किया है।

उपन्यास 'अपनी सलीबे' में अगर दलित विमर्श से जुड़े प्रश्नों पर है तो उस के प्रत्युतर में समाज की मानसिकता और उसे बदलने की प्रक्रिया पर भी बहुत बुछ है। काम काजी महिलाओं की समस्यओं को उपन्यास में तथा कहानी सग्रहों में उजागर किया गयाहै। इस प्रकार साहित्य लेखनआदमी के भीतर की उथल-पुथल से पैदा होता है। जो रचना के माध्यम से सार्वजनिक होता है।

अलीगढ़ विशेष रूप से साम्प्रदायिक दंगो के लिए कुख्यात है। नमिता जी के भावुक मन पर इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इन्होंने इनका नजदीकी से मूल्याकन किया और साहित्य में इसे स्थान दिया। ताकि वास्तविक स्थिति से पाठक रूबरू होतके।

यह नहीं, 'रक्षक', 'सांड', 'भूषक', 'पर्सनल मामला', 'सरबजीत', डाल से टूटेपत्ते, 'कफ्र्यू' आदि कहानियों में साम्प्रदायिकता का जहर फैलाने वाले समाज विरोधीतत्त्वों के विरूद्ध लेखिका अपना स्वर मुखर कर के, साम्प्रदायिक सद्भाव और सेक्युलरजन नीतिको बल प्रदान करती है। उन्होंने अपनी कहानियों में जाति और व्यक्ति के बीच लहरी होतीरबाई, धार्मिक राजनेताओं के कारण फैलती खामी धाता तथा साम्प्रयादिकता की भयावहता और असुरक्षा को साजमता के साथ उद्घाटित किया है।

9 नमिता सिंह ने पूंजीवादी व्यवस्था में बदलते हुए मानवीय मूल्यों और संवदेनाओं को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है और स्पष्ट किया कि किस प्रकारआज की नई पीढी अपने माता-पिता के प्रति संवदेनदीन हो गई है-बसन्ती काकी, दर्द, बापसी, 'कूये यार मे', 'घर चलते है डार्लिग' आदि कहानियाँ में रिश्तों की अमानवीयता दर्शायी गई है।

नमिताजी के साहित्यिक संघर्ष की कर्मस्थली समाज ही है। ये सामज से सीधा मुठभेड़ करती हैं। समाज में हर वर्ग अपने जीवन की जटिलताओं से संघर्ष कर रहा है चाहे वह मध्य वर्ग हो या निम्नवर्ग। इन वर्गो को अपने साहित्य में स्थान दे कर पाठक को वास्तविक स्थिति से अवगत कराया तथा सरकार व शोषक वर्ग के ढाँचे की बखिया उधेडी है। मध्य वर्ग की कहानियाँ में 'टूट जाने के बाद', खुले आकाश के नीचे, 'जीम हुईबर्फ' में लिखका लिखती है-"हम

बीच के लोग न तो उच्च वर्ग की भाँति इन सम्बन्धों को अति सहज रूप में लेते हुए बोल्ड हो पाते है जो ऐसी मान्यताओं को जूते की नोक पर ले और न ही पढ-लिख लेने के बाद बैकवर्ड कहलाना बर्दाश्त कर पाते। नतीजे में क्या मिलता है?

वही जडता अवश दिलो-दिमाग और घिसटते जिन्दगी के कदमा। गलत नम्बर का जूता, अँगूठी, उसका सपना, 'बदली तुम हो' सादिया (में मध्य वर्गीय मानसिकता को बदला नहीं जा सकता) आदि अनेक कहानियाँ सम्मिलित की जा सकती है।

नमिता जी ने निम्न वर्ग में नौकरानियों की दयनीय स्थिति व मजबूरियों का अंकनकर, शोषक वर्ग की स्वार्थपरता का चित्रण किया हैं। निम्न मध्य वर्ग की कहानियों में 'बन्तों', उबारने वाले हाथ, 'एक पैर वाला शेर' दर्द, खेल, अलख आदि कहानियों में चतुर्थ श्रेणी के लोगों की विषमताओं का चित्रण है।

नालेपार का आदमी, 'राजा का चैक' 'समाधान', 'सैलाब में नमिता सिंह ने सतावर्ग और बुद्धिजीवी वर्ग की संवदेन शून्यता को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। मजदूर वर्ग की दैनिन्दन आवश्कताओं के पुरा ने होने पर वे हडताल रखते है, उनके घर चूल्हा नहीं जलता। परन्तु मालिक लोग उन्हें धार्मिकता की ओट में रख हमेशा शोषित वर्ग बनाए रखना चाहते है। ताकि उनका ऐश्वर्य बना रहे। लेखिका के संकेत किया है कि बुद्धिजीवनी वर्ग और तथा कथित राजनीतिज्ञ घन और हैसियत के आगे न केवल मौन हो जाते है। बल्कि अपनी सुख-सुविधाओं के लिए जन-संघर्ष को कमजोर बनाते है। इन कहानियों मे वे न केवल मानवीय मूल्य और सम्बघों की तलाश करती हैं, बल्कि राजनीतिक विसगतियों के लिए जिम्मेदार षडयन्त्र कारी शक्तियों के छल को उजागर करतीहै।

10 निष्कर्ष

इस प्रकार अपने जीवानुभवों द्वारा नमिताजी ने साहित्यिक संघर्ष को लेखन रूप में प्रस्तुत कियाऔर समाधान भी सुझाए। इनकी कहानियाँ संघर्म और संवेदना के विविध स्तरों से परिचित कराती हुई वर्तमान सामाजिक व्यवस्था, गाँव और शहर के बीच बढती दूरी, व्यक्ति और व्यक्ति के बीच टूटी मानवीय स्थिति, साम्प्रदायिकता की भयावहता और नारी शोषण, आदि का सूक्ष्म चित्रण प्रस्तुत करती है। उन्होंने अपनी कहानियों में शोषित और उत्पीडित वर्ग की विषम परिस्थितियों से जूझते जन-साधारण की अदम्य जिजीविषा और संघर्ष की भावना को स्वर प्रदान किया है।अतः उनकी कहानियाँ समूचे जीवन का प्रतिनिधित्व करती है।

सन्दर्भसूची

1. डॉ. शर्मापरवीन - डॉ. नमिता सिंह का कथनसाहित्य, पेज 2, 4, 5, 6 2.
2. डॉ. शमापरवीन - डॉ. नमिता सिंह का कथासाहित्य, पेज 9, 10 3.

3. डॉ. शमापरवीन - डॉ. नमिता सिंह का कथासाहित्य, पेज 158 4.
4. डॉ. शमापरवीन - डॉ. नमिता सिंह का कथासाहित्य, पेज 160 5.
5. डॉ. नमिता सिंह - 'मेरी रचना प्रक्रिया' (लेख) कहानीकार, मई 1991, पेज 117 6.
6. डॉ. शमापरवीन - डॉ. नमिता सिंह का कथासाहित्य, पेज 12 7.
7. डॉ. नमिता सिंह - 'खुले आकाश के नीचे', (जीम हुई बर्फ), पेज 45
8. नमिता सिंह - 'मेरी रचना प्रकिया' (लेख) 'कहानीकार, मई 1991, पेज 112
9. नमिता सिंह - मेरी रचना प्रक्रिया (लेख) 'कहानीकार', मई 1991, पेज 113
10. नमिता सिंह - मेरी रचना प्रक्रिया, कहानीकार, पेज 115